NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.S.W. -9

समुदाय विकास के लिए समुदाय संगठन प्रबंधन

(Community Organisation Management for Community Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Mamta,* M.A., B.Ed.

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

समुदाय विकास के लिए समुदाय संगठन प्रबंधन

(Community Organisation Management for Community Development)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2016 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2016 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2015 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2015 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2014 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2013 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2012 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2011 (Solved) 1
Question Paper—December, 2010 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. समुदाय की अवधारणाएं और सामुदायिक कार्य 1
(Concepts of Community and Community Work)

2. शहरी समुदाय 8
(Urban Communities)

3. ग्रामीण समुदाय की रूपरेखा 14
(Profile of Rural Communities)

4. जनजातीय समुदाय 20
(Tribal Communities)

5. सामुदायिक विकास कार्यक्रम और जवाबदेही 27
(Community Development Programmes and Accountability)

6. सामुदायिक संगठन : संकल्पना, मूल्य दिग्विन्यास तथा मान्यताएँ 34
(Community Organisation: Concept, Value Orientation and Assumptions)

7. सामुदायिक संगठन का इतिहास (History of Community Organisation) 41

8. समाज कार्य के अभ्यास के तरीके के रूप में सामुदायिक संगठन 47
(Community Organisation as a Method of Social Work Practice)

9. सामुदायिक संगठन के प्रारूप तथा दृष्टिकोण 57
(Models and Approaches of Community Organisation)

10. सामुदायिक संगठन में वर्तमान मुद्दे तथा सामुदायिक 66
संगठनकर्त्ता की भूमिका
(Current Issues in Community Organisation
and the Role of the Community Organiser)

11. सामाजिक क्रिया : अवधारणा एवं अनुप्रयोग (Social Action: Concept and Application) 78

12. सामाजिक कार्य और सामाजिक क्रिया का एकीकृत दृष्टिकोण 84
(Integrated Approach to Social Work and Social Action)

13. सामाजिक क्रिया के मॉडल (Models of Social Action) 91

14. सामाजिक क्रिया में रणनीतियां तथा कौशल (Strategies and Skills in Social Action) 97

15. सामाजिक क्रिया : समाज कार्य का एक तरीका 104
(Social Action: A Method of Social Work)

16. समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणाएँ, इतिहास एवं प्रकृति 112
(Social Welfare Administration: Concept, History and Nature)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
17.	समाज कल्याण प्रशासन के कार्य, सिद्धांत और कार्यक्षेत्र (Functions, Principles and Scope of Social Welfare Administration)	119
18.	समाज कल्याण संगठन (Social Welfare Organizations)	126
19.	समाज कल्याण सेवाओं का प्रबंधन (Management of Social Welfare Services)	134
20.	सामाजिक नीति और समाज कल्याण प्रशासन (Social Policy and Social Welfare Administration)	141

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

समुदाय विकास के लिए समुदाय संगठन प्रबंधन

M.S.W.-9

(Community Organisation Management for Community Development)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक* ***समान*** *हैं।*

प्रश्न 1. सामुदायिक संगठन के विभिन्न प्रारूपों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-59, 'सामुदायिक संगठन के प्रारूप'

अथवा

ग्रामीण, आदिवासी और शहरी क्षेत्रों में सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में से कुछ पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-29, 'सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का इतिहास'

प्रश्न 2. सामाजिक नीति से आप क्या समझते हैं? सामाजिक कल्याण प्रशासन के लिए इसके संबंध और प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-141, 'परिचय', 'सामाजिक नीति और समाज कल्याण प्रशासन' तथा पृष्ठ-146, प्रश्न 3

अथवा

सामाजिक क्रिया को परिभाषित कीजिए। सामाजिक क्रिया की रणनीतियों और युक्तियों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-80, प्रश्न 1 तथा अध्याय-14, 'सामाजिक क्रिया में रणनीतियाँ तथा युक्तियाँ'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भारत में जनजातीय समुदायों के बीच बुनियादी संरचना क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-24, प्रश्न 2 तथा प्रश्न 3

(ख) सिद्दीकी द्वारा दिए गए पड़ोस के विकास मॉडल की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-59, 'प्रतिवेश विकास मॉडल' तथा पृष्ठ-62, प्रश्न 2, '*(i)* प्रतिवेश विकास मॉडल'

(ग) सामुदायिक संगठन और सामाजिक कार्य के अन्य तरीकों के बीच संबंधों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-54, प्रश्न 5

(घ) सामाजिक क्रिया की मुख्य रणनीति के रूप में वकालत का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-101, प्रश्न 2, 'विधायी सामाजिक क्रिया मॉडल'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) गंदी बस्ती को परिभाषित कीजिए। गंदी बस्तियों के विशेष लक्षण क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-10, '(ख) मलिन बस्तियाँ', 'मलिन बस्ती की परिभाषा'

(ख) एक गैर-सरकारी संगठन की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-127, 'गैर-सरकारी संगठन की विशेषताएं'

(ग) सामुदायिक अभ्यास के लिए सामुदायिक विकास की अवधारणा पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-27, 'सामुदायिक विकास की अवधारणा' तथा पृष्ठ-31, प्रश्न 1

(घ) सशक्तिकरण की अवधारणा को समझाइए।

उत्तर–सामूहिक समुदाय शक्तिकरण पूरे विश्व में स्थित एक गैर-लाभकारी संघ है, जो समुदायों को सशक्त बनाने में इंटरनेट पर नि:शुल्क प्रशिक्षण सामग्री बनाते हैं। अनुवाद का कार्य करते हैं और उसे नि:शुल्क उपलब्ध कराते हैं। समुदाय सशक्तिकरण पद्धति इस विचार पर आधारित है कि सामाजिक व्यावहारिकता तो नहीं बनायी जा सकती, लेकिन समुदाय के लिए स्वयं को विकसित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

विकास का तात्पर्य बड़ा और ज्यादा जटिल होना है, किन्तु सशक्तिकरण का अर्थ मजबूत बनना है, जबकि दोनों परिभाषाओं के अर्थ अलग हैं, वे आपस में गहरे से जुड़े हैं। जब हम एक समुदाय को सब-कुछ देते हैं और इसके लिए सब-कुछ करते हैं, तो वह एक सांस्कृतिक तत्त्व का लक्षण है। इस कार्यप्रणाली के कुछ सिद्धांत इस प्रकार हैं–

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

1. सत्ता का संतुलन बनाने वालों की इच्छा होनी चाहिए कि समुदाय और ज्यादा आत्मनिर्भर बने और इसके लिए प्रयास और बलिदान करने के लिए तैयार रहे।
2. सशक्तिकरण के लिए एक प्रशिक्षित प्रतिनिधि होना चाहिए, जो प्रोत्साहित करे, संगठित करे और समुदाय का मार्गदर्शन करें।
3. जहां सहायता की पेशकश की जा सकती है, यह दान सहायता नहीं होनी चाहिए जो निर्भरता और कमजोरी को बढ़ावा देती है, अपितु भागीदारी होनी चाहिए।
4. एक समुदाय परियोजना के लिए आवश्यक संसाधनों का एक बड़ा अनुपात स्वयं समुदाय के सदस्यों द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए।
5. हमारा प्रारंभ से ही यह उद्देश्य होना चाहिए कि प्रतिभागियों को पूरा नियंत्रण लेने की जरूरत है, पूर्ण निर्णय लेने और उन कार्यों के लिए पूरी जिम्मेदारी स्वीकार करें, इससे नेतृत्व की शक्ति में वृद्धि होगी।

(ङ) एक धर्मार्थ न्यास के उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-128, 'न्यास'

(च) सामाजिक क्रिया में सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण के महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-93, प्रश्न 1, 'विधायी सामाजिक क्रिया मॉडल'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) घुमंतू जनजाति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-25, प्रश्न 4

(ख) संबंधपूर्ण कुशलताएं

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-102, प्रश्न 4, 'संबंधगत कौशल'

(ग) विवेकीकरा प्रारूप

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-92, 'चैतन्यकरण मॉडल'

(घ) यूनिसेफ (UNICEF) का उद्देश्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-129, 'संयुक्त राष्ट्र निकाय'

(ङ) हितधारक विश्लेषण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-98, 'संबंधित पक्षों का विश्लेषण'

इसे भी देखें–हितधारक पक्षों का विश्लेषण सभी संबंधित समूह; जैसे लक्षित समूह, प्रत्यक्ष लाभ और आगामी लाभ के बारे में सामाजिक क्रियावादी सूचना उपलब्ध कराता है। यह विश्लेषण उन विभिन्न पक्षों की पहचान से शुरुआत करता है, जो समस्या से प्रभावित होते हैं। मुख्यत: वंचित समूह विवादित भागीदार हो सकते हैं। इन्हें इनकी अनुकूलता या प्रतिकूलता के स्तर के अनुसार सूचीबद्ध करना अगला कदम होगा। विभिन्न संबंधित पक्षों के हितों और संभावनाओं की पहचान करना तथा उनकी क्षमताओं और संभावित योगदान का आकलन करना उससे अगला चरण होगा।

(च) कुडुम्बश्री कार्यक्रम (Kudumbashree Programme)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-33, प्रश्न 4

(छ) नागरिक रिपोर्ट कार्ड

उत्तर–नागरिक रिपोर्ट कार्ड एक प्रक्रिया है जिसमें समुदाय द्वारा किसी परियोजना, क्षेत्र में किए जा रहे विकास कार्य या कार्यक्रम के लाभ-हानि का जनता में खुले रूप से निरीक्षण किया जाता है। इसे छ: सोपानों में बाँटा जा सकता है–

1- fjiksZ dh tkusokyh ifj;kstukvksa] lsokvksa vFkok for y{;ksa dk mYys[k djukA
2- Hkkxhnkjh dh igpku djuk] mudh Hkwfedk vkSj dk;ksZa dk ij eè;ku nsukA
3- mu dk;ZØfu"iknu lwpdksa dks ifjHkkf"kr djuk] ftUgsa lkekftd y[kk&ijh{kk dh izfØ;k esa Hkkx ysus okys vfèkdrj lnL;ksa }kjk bl lanHkZ esa vkSj Lohdk;Z fd;k tkrk gSA
4- dk;ZØfu"iknu lwpdksa ij vk/kkfjr MsVk dh leh{kk osQ fy, ppkZ djuk vkSj fu;fer cSBosQ djukA
5- ukxfjd fjiksZ dkMZ dh cSBd dh vuqorhZ dk;Zokgh djukA
6- fo'oluh;] LFkkuh;] yksdksa dk lewg LFkkfir djuk] tks ifrc¼ vkSj Lora= gksA

lkekftd dk;ZdrkZvksa }kjk i esa ge ukxfjd fjiksZ dkMZ dh voèkkj.kk vkSj izfØ;k dk foLrkj djuk vkSj mlls yksdfiz; cukuk t:jh gS tks yksdra= dks etcwr nsuk okyk gksA

(ज) व्यवस्था दृष्टिकोण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-87, प्रश्न 1

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समुदाय विकास के लिए समुदाय संगठन प्रबंधन

(Community Organisation Management for Community Development)

समुदाय की अवधारणाएं और सामुदायिक कार्य

(Concepts of Community and Community Work)

1

परिचय

साधारण बोलचाल की भाषा में समुदाय व्यक्तियों का ऐसा समूह या प्रणाली है, जहाँ वे मिलकर सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए एक निश्चित भूभाग में रहते हैं। अत: समुदाय के निर्माण के लिए सामान्य हित, निश्चित भूभाग, सामान्य जीवन-स्तर तथा एकता की भावना होना अनिवार्य है।

समुदाय अति विस्तृत और व्यापक शब्द है। इसमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक समूहों का समावेश होता है। उदाहरण के लिए परिवार, धार्मिक संघ, जाति, पड़ोस, नगर, राष्ट्र आदि समुदाय के विभिन्न रूप हैं। समाज के सभी स्तरों पर मध्यस्थता के कारण लोग आपस में जुड़े होते हैं। समुदाय की परिधी एक वर्ग मील से कम का क्षेत्र भी हो सकता है। इसका परिधी विश्व भी हो सकता है, परंतु यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसके सदस्यों में आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक समानताएं हों। मध्यस्थता के द्वारा सूक्ष्म स्तर और लघु स्तर आपस में जुड़े होते हैं। जहाँ छोटे स्तर पर कार्य करते हुए लोग बड़े स्तर के पर्यावरण को समझने में लगे होते हैं, वहीं बड़े स्तर पर कार्य कर रहे लोग लक्ष्य को पाने के लिए कार्यक्रम/योजना बनाते हैं। इसमें समुदाय उनके लिए अहम भूमिका निभाता है। इस तरह समुदाय अपनी विस्तृत अवधारणा से समाज के हर समूह को शामिल करता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

परिभाषाएँ

समुदाय को अलग-अलग अर्थों में बताया गया है। इसे वस्तुपरक परिभाषा के विपरीत विषयपरक रूप से समझा गया है।

- रॉबर्ट बेला के अनुसार, ''यह उन लोगों का एक समूह है, जो सामाजिक रूप से अंत:निर्भर हैं, जो चर्चा और निर्णयन में भाग लेते हैं और जो उन कुछ व्यवहारों का आदान-प्रदान करते हैं, जो समुदाय को परिभाषित करते हैं तथा इसके द्वारा प्रोत्साहित होते हैं।"
- ब्रायोन मुनोन (1968) ने समुदाय को परिभाषित करते हुए कहा है–''समुदाय अपेक्षाकृत आत्मनिर्भर जनसंख्या है, जो सीमित भौगोलिक क्षेत्र में रहती है तथा जो एकता और परस्पर निर्भरता की भावनाओं से साथ-साथ जुड़ा हुआ है।''
- रैंडम हाऊस अनएब्रिज्ड डिक्शनरी में समुदाय के अनेक अर्थ दिए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. किसी भी परिधि के सामाजिक समूह में रहकर सरकार का प्रयोग करते हैं तथा उनकी आपस की सांस्कृतिक ऐतिहासिक विरासत होती है।
2. समाज में सभी समुदायों की अपनी सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक विशेषताएँ होती हैं, जिससे वे समाज में अलग समुदाय बनाते हैं, जैसे–व्यापारी समुदाय, विद्वानों का समुदाय।
3. समुदाय को गाँव, बस्ती, शहर आदि नाम दिए गए हैं, परंतु समुदाय का यह वर्गीकरण सही नहीं है। इसके आकार को सरकार के अन्य के वर्गीकरण निर्धारित करते हैं। इसके अलावा अभासी समुदाय को भी समुदाय का नाम दिया गया है।

आभासी समुदाय ऐसा समुदाय है, जो अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संचार माध्यम, टेलीफोन, ई-मेल, ऑनलाइन जुड़े होते हैं।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आभासी समुदाय अथवा हम इसे ऑनलाइन समूह भी कह सकते हैं। यह समुदाय परस्पर दूर होते हुए भी एकीकृत हो गया है। यह ऑनलाइन समुदाय सामाजिक सॉफ्टवेयर में पृथक और संयुक्त तरीके से अनेक साधनों, जैसे चैट, ई-मेल आदि से संप्रेषण करते हैं। इंटरनेट महत्त्वपूर्ण सामाजिक-तकनीक परिवर्तन कर सकता है। वह पर्याप्त मात्रा में नये परिवर्तन कर भी चुका है। आभासी नेटवर्क सामुदायिक कार्यों के लिए अलग तरीके से सृजित किया गया है। उदाहरण के लिए ग्राम ब्लाग और खदान लॉबी इसके अंतर्गत आते हैं, जो सामूहिक हित और विकास के लिए एक-दूसरे के साथ जुड़े हैं।

वैसे तो समुदाय एक तरह से समान हितों के लोगों से जुड़ा हुआ बंधन है, जो उनके समान विचार, संस्कृति का परिणाम है, तथा वे भौतिक, व्यावसायिक हितों से जुड़े हैं।

मगर कुछ समुदाय अपने विश्वास, हित, मूल्यों के द्वारा जुड़े होते हैं, परंतु इनमें कोई भौतिक हित जुड़ा नहीं होता।

समुदाय की रूपरेखा का निर्धारण हम समुदाय की कार्य पद्धति, लक्ष्य, संगठन का अवलोकन करके ही कर सकते हैं।

समुदाय निर्माण : समाजवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि

18वीं सदी के मध्य में सबसे पहले जर्मनी के समाजशास्त्री फर्डीनेंड टोनीज समुदाय के निर्माण के संबंध में आगे आए। उन्होंने समुदाय की पहचान के लिए दो परिवर्त्य जैमिनशेट प्रस्तुत किए (Gemeinchaft) और दूसरा गैसेलशेट (Gesselchaft)।

- **जैमिनशेट समुदाय** समुदाय को सहज प्राकृतिक तरीके से स्वीकार करता है। यह समुदाय के क्रियात्मक कार्यों को न देखकर समुदाय को प्राकृतिक गुणवत्ताओं के तहत ही स्वीकार करता है। यह मान्यता हमें परिवारों, परंपरागत समूहों व छोटे समूहों में दिखती है।
- **गैसेलशेट समुदाय** व्यक्ति के हितों और कार्यों को अधिक बल देकर विशिष्ट विभाजित सामाजिक अंत:संबंधों पर आधारित समुदाय को बल देते हैं। ये कानून के अनुसार समुदाय पर नियंत्रण रखते हैं। कानून का उल्लंघन होने पर ये प्रतिबंध भी लगाते हैं। इस तरह से यह समुदाय व्यक्तिगत स्वतंत्रता देता है और इसी कारण यह समुदाय अधिक सफल है।

यूरोप और संयुक्त राज्य औद्योगिक पूँजीवाद के परिणाम-स्वरूप इन समुदायों की वजह से मानव संबंधों का अलग रूप देखने को मिल रहा है।

जहाँ तक भारतीय समाज की बात है, तो दोनों ही स्वरूप इस समुदाय की पहचान दिखाते हैं, जो भारतीय ग्राम, शहर, महानगर में हमें देखने को मिलता है।

समुदाय के जटिल और बृहद आयाम को देखते हुए कोई एक ही संरचना समुदाय व इसकी पृष्ठभूमि का आधार प्रस्तुत नहीं करती।

वैसे समुदाय को और अधिक अच्छी तरह समझने के लिए हम समुदाय को दो पहलुओं में बाँटकर समझ सकते हैं–

(1) भौगोलिक समुदाय

(2) कार्यात्मक समुदाय।

भौगोलिक स्थान से बंधा हुआ समुदाय

ब्रूएगमैन ने समुदाय को समझने की आवश्यकता बतायी है। समुदाय की सीमाएँ मान्य प्राधिकार या भौतिक संरचना से भी बाँधी जाती हैं। ये पंचायत, मोहल्ला आदि से भी जानी जाती हैं, वहीं पंचायत, मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर आदि से भी जानी जाती हैं। भौगोलिक समुदाय मुख्यत: एक स्थान विशेष को प्रदर्शित करता है, जैसे–महरौली, मालवीय नगर आदि।

हितार्थ समुदाय (Communities of Interest)

यह समुदाय मुख्यत: साझे हितों पर आधारित समुदाय की पहचान को प्रदर्शित करता है। ये समुदाय व्यावसायिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि भी हो सकते हैं। इस तरह के समुदाय के कई रूप होते हैं। कभी यह नगर में अपने हित और मेलजोल से अलग-अलग क्षेत्रों में बंधकर अपनी सामुदायिक पहचान देता है, तो कभी यह हितार्थ समुदाय कार्यात्मक समुदाय बन जाता है, जो किसी सामाजिक मुद्दे के हित के लिए काम करता हो, जैसे–महिला संघ आदि।

इस तरह समुदाय का स्वरूप व्यापक है, जो अपने भिन्न-भिन्न रूप से समाज को जोड़ता है। यह समाज को प्रत्येक स्तर (सूक्ष्म और स्थूल) पर मानव संबंधों को विभिन्न तरीके से प्रदर्शित करता है।

समुदाय रचना : समाज कार्य परिप्रेक्ष्य

क्रिर्स्ट-एशमा के अनुसार समुदाय सिद्धान्त को लैंस की श्रेणियों के रूप में समझ सकते हैं। ये तीन संरचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(क) सामाजिक व्यवस्था के रूप में समुदाय–इस रूप में समुदाय विभिन्न स्तरों से आपस में जुड़ा हुआ है। जहाँ एक पद्धति अनेक अंत:संपर्क करने वाले घटकों से जुड़ी हुई हैं, जो एक सिले-सिलेवार ढंग से जुड़े होते हैं। इसके अलावा समुदाय उन उपप्रणालियों से जुड़े हैं, जो एकीकृत रूप में पूरे समुदाय की आवश्यकता को पूरा करते हैं।

उत्पादन, वितरण, उपभोग, समाजीकरण, सामाजिक नियंत्रण, सामाजिक सहभागिता ऐसे तन्त्र समाज में मौजूद हैं, जो समाज की प्रणाली और इकाइयों को आपस में जोड़े रखते हैं। इन उपप्रणालियों के कारण हम समुदाय की जरूरतों को जान सकते हैं। अगर समाज कार्यकर्त्ताओं के द्वारा समुदाय की समीक्षा की जाए और समुदाय की सफलता या असफलता का आकलन किया जाता है, तो इन्हें और विस्तृत रूप से वैश्विक आधार पर इनके प्रभाव को समझ सकते हैं, जो वैश्विक रूप में समुदाय को प्रभावित करते हैं।

(ख) पारिस्थितिकीय तंत्र के रूप में समुदाय–यह समुदाय का एक अलग रूप है, जहाँ हम समुदाय के विभिन्न भागों और

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पर्यावरण के बीच सहभागिता का संबंध देख सकते हैं। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि किसी स्थान विशेष की जलवायु, भूमि आदि लोगों के रहने के लिये उपयुक्त होती है। यही पारिस्थितिकी और समुदाय का अंत:संपर्क है। भौतिक विशेषताएँ सामुदायिक जीवन की महत्त्वपूर्ण जरूरत हैं। शहरी क्षेत्र हो या ग्रामीण क्षेत्र, सभी को स्थान की गुणवत्ता के अनुसार बसाया जाता है।

समुदाय के इस रूप में कुछ गतिशील तत्त्वों से सामुदायिक संरचनाओं के उद्‌भव को समझने में सहायता मिलती है। ये गतिशील तत्त्व निम्नलिखित हैं–

1. **प्रतियोगिता**–यह मुख्यत: संसाधनों की पूर्ति के लिए विभिन्न समूहों में प्रतियोगिता करवाता है।
2. **प्रभुत्व**–सेवाओं की पहुँच पर जाति के प्रभुत्व को प्रदर्शित करता है।
3. **केंद्रीकरण**–विशेष जाति या समूह के हाथों में सत्ता की शक्ति का केंद्रीकरण दिखाता है।
4. **संकेन्द्रण**–यह मुख्यत: विशेष जाति समूह के आवासों के स्थान को व्यक्त करता है।
5. **अनुक्रम अथवा उत्तराधिकार**–इसमें जनसंख्या स्थिति के अनुकूल या प्रतिकूल होने पर स्थान बदलते रहते हैं।
6. **पृथक्करण**–समूहों की सहभागिता के अभाव में उपसमूह के रूप में बस जाना ही पृथक्करण है।

इन विशेषताओं की वजह से जो स्थान का बँटवारा होता है उससे, हमें समुदाय के भौतिक और सामाजिक पर्यावरण के बीच संबंध को समझने में मदद मिलती है।

(ग) सत्ता के पद और संघर्ष के रूप में समुदाय–मतभेद और संसाधनों का असमान वितरण सत्ता के बीच संघर्ष को जन्म देता है। बुनियादी जरूरतों तथा समूह शक्ति का अधिकाधिक नियंत्रण पाने की लालसा भी समुदाय में संघर्ष को जन्म देती है। जाति, धार्मिक, भाषायी गुणों आदि पर आधारित सामाजिक श्रेणी अन्य समूहों पर अपना प्रभुत्व जताती है। कभी-कभी तो संघर्ष इतना बढ़ जाता है कि प्रशासन/कानून का सहारा लेना पड़ता है। समुदाय का यह रूप समुदाय की शक्ति, क्षमता, संघर्ष की स्थितियों का सामना करने की क्षमता को समझने में सक्षम बनाता है। यह संघर्ष मुख्यत: गाँवों और कस्बों में दिखाई देता है। दंगा इसका ज्वलंत उदाहरण है।

समुदाय की विशेषताएँ

समुदाय शब्द आते ही हमारे दिमाग में चित्र बनता है कि यह एकता से जुड़ा लोगों का ऐसा समूह है जो कि समान संस्कृति, मूल्य प्रथा से जुड़े होकर समुदाय के रूप को जन्म देता है।

समुदाय की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. मानव मापक्रम (Human Scale)–समुदाय में व्यक्ति आपस में प्रत्यक्षत: तथा अंत:संपर्कों से जुड़े होते हैं।

2. पहचान और आत्मीयता (अपनापन)–अपने समूह के प्रति निष्ठा तथा वफादारी की भावना व्यक्ति को समुदाय के सदस्य से पहचान कराती है। इससे आत्मीयता का जन्म होता है और यही आत्मीयता व्यक्ति को सुरक्षा का एहसास कराती है।

एक जैसी संस्कृति के लोग आपस में स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। यही जुड़ाव उन्हें अपने सुरक्षित होने का एहसास दिलाता है।

3. उत्तरदायित्व (Obligations)–समुदाय में आत्मीयता अपने आप नहीं आती है। इसमें व्यक्ति आपस में एक-दूसरे से उम्मीद रखते हैं, जो अधिकारों का बोध और उत्तरदायित्व की भावना को जन्म देता है। सामुदायिक जीवन जीने के लिए रीति-रिवाजों और परंपराओं का सामूहिक रूप से निर्वाह किया जाता है।

4. जैमिनशेट (Gemenischaft)–समुदाय के लाभ के लिए लोगों को अंत:संपर्क करके विभिन्न भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। एक तरफ यह व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, तो दूसरी तरफ समुदाय को भी लाभ प्रदान करता है।

5. संस्कृति (Culture)–हरेक समुदाय की अपनी संस्कृति होती है, जो समुदाय की पहचान को दिखाती है।

समाज कार्य अभ्यास के अंतर्गत सामुदायिक कार्य का स्थान

समाज में पर्याप्त मात्रा में ऐसे मुद्दे होते हैं जो सुधार की जरूरत से जुड़े होते हैं। सामाजिक कार्यकर्त्ता इसके लिए प्रयत्नशील होते हैं। समाज में सामुदायिक कार्य मध्यस्थता की पद्धति के रूप में देखा जा सकता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

व्यावसायिक कार्य अभ्यास और समाज कार्य व्यवसाय की पद्धतियों के बीच इसके महत्त्व के संदर्भ में अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन में समाज कार्य व्यवसाय के इतिहास को समझना आवश्यक है।

19वीं सदी में समाज कार्य को वैयक्तिक कार्य की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया। उदाहरणत: अमेरिका में घरों में और दान संगठन समाजों में जिनके साथ समाज कार्य व्यवसाय शुरू हुआ था, उनमें सुधार का तत्त्व प्रमुख था।

सामुदायिक संगठन में स्वास्थ्य तथा सुधार योजनाओं पर ध्यान दिया गया। सामुदायिक संगठन तकनीक और ज्ञान के साथ सामाजिक सुधार पर भी ध्यान देता है।

सामुदायिक संगठन की उत्पत्ति को कार्य पद्धति के रूप में ग्रेट ब्रिटेन में समाज कार्य अभ्यास की एक पद्धति के रूप में वैयक्तिक कार्य के बढ़ते असंतोष के रूप मे देखा जा सकता है। इसके निम्नलिखित कारण हैं–

1. समाज कार्य पद्धति के रूप में वैयक्तिक कार्य की कमियाँ सामुदायिक संगठन के विकास में एक प्रमुख शक्ति के रूप में दिखाई देती हैं।
2. ज्ञान तथा सेवाओं को समाज में स्थापित करने की ललक।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

3. समुदाय में अग्रणियों के कार्य का प्रभाव।
4. सरकारी खर्च में कमी करके अन्य मुद्दों पर विचार किया जाना।
5. राजनीतिक परिवर्तनों ने विभिन्न कारणों से विकेंद्रीकरण की नीति लागू की। स्व-सहायता और उत्तरदायित्व पर आधारित स्थानीय समाजवाद को बढ़ावा दिया गया।

1968 में एक अध्ययन समूह द्वारा सामुदायिक कार्य का यह शब्द गुलवेन्कियन फाउंडेशन द्वारा दिया गया था।

सामुदायिक कार्य में कार्यकलाप के तीन रूप देखे गए–

(1) सामुदायिक विकास
(2) सामुदायिक संगठन
(3) सामाजिक नियोजन।

मध्यस्थता के उद्देश्य

सामुदायिक संगठन मुख्यत: उन्हीं मुद्दों पर ध्यान देते हैं, जिन पर समाज बदलाव चाहता है। सामुदायिक संगठन का लक्ष्य तो एक ही होता है, परंतु समूहों, संगठनों और आंदोलनों के उद्देश्य में विविधता होती है।

उदाहरण के लिए भारत एक पुरुष प्रधान देश है, फिर भी यहाँ पुरुष-महिला समानता की बात होती है। भारत में फैली सभी प्रकार की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक कमियों को दूर करने के प्रयास किए गए हैं।

सामुदायिक कार्य मुख्यत: समाज कल्याण सेवा की ओर ध्यान देता है, ताकि हर वर्ग को अच्छी जीवन शैली प्राप्त हो। स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका की सुविधा उपलब्ध हो सके।

सामुदायिक कार्य के एक भाग के रूप में सामाजिक क्रिया

सामुदायिक संगठन सीधे समस्या को सुलझाने की कोशिश करते हैं। इसके लिए वे एक संगठन बनाकर मौजूदा हालात पर दबाव बनाते हैं और जरूरतमंद समूह को उसका हक दिलाते हैं।

समुदाय कार्य के कार्यकर्त्ता को अधिकार दिया जाता है, ताकि वह समस्या को अधिक प्रभावशाली ढंग से सुलझाने में सक्षम व्यक्ति के रूप में जाना जा सके।

सामुदायिक विकास उपागम समुदायिक (Community Development Approaches)

सामुदायिक कार्यक्रम लोगों को उनकी समस्याओं के प्रति जागरूक करते हैं। वे समूह में जाकर अपने प्रति विश्वास फैलाकर एक संगठन बनाकर समस्या समाधान करने की कोशिश करते हैं।

समाज में फैली हुई कोई भी बुराई हो, जिससे लोगों का शोषण हो रहा है, वे शोषित वर्ग को उसके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं। इसके लिए उन्हें कई जटिल स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसे ये अपने तरीके से सरल बनाते हैं।

मुख्यत: ये अपने कार्यक्रम में शोषित वर्ग की आवाज को ऊँची करके उसका अधिकार दिलाते हैं और समाज में हर तबके, चाहे वह नीचा हो या ऊँचा हो, समानता का स्तर बनाने की कोशिश करते हैं।

स्वपरख अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. समुदाय रचना को समाज कार्य परिप्रेक्ष्य के रूप में समझाइए।

उत्तर–2008 में किर्स्ट एशमा के अनुसार समुदाय सिद्धान्तों को लैंस की श्रेणियों के रूप में समझा जाता है, जो समुदाय के विभिन्न पहलुओं पर बल देते हैं। प्रत्येक पहलू समुदाय के भिन्न आयामों और इसकी गतिशीलता और इसके सदस्यों के जीवन को प्रभावित करने के तरीकों की जाँच करता है। समाज कार्य में निम्नलिखित सामुदायिक संरचनाओं को समझना उपयोगी होता है–

(क) सामाजिक व्यवस्था के रूप में समुदाय–कार्यकर्त्ता उन अनेक परिघटनाओं को समझने के लिए सामान्य प्रणाली सिद्धांत का प्रयोग करता है, जिसका सामना वे सामाजिक यथार्थ को समझने में करते हैं।

उदाहरणत: एक व्यक्ति को परिवार एवं नातेदारी समूह के अंदर एक तत्त्व के रूप में देखा जाता है। नातेदारी समूह समुदाय में उपस्थिति रहता है। इस प्रकार प्रणाली का परिप्रेक्ष्य समुदाय की संरचनाओं और प्रक्रियाओं को समझने के लिए उपयोगी संरचना देता है, जो संरचनात्मक तत्त्वों को अपने साथ लाता है।

पाँच प्रमुख कार्यों को समुदाय के अंदर विभिन्न सामाजिक इकाइयों और प्रणालियों के साथ जुड़ा हुआ माना जाता है। ये उत्पादन-वितरण, उपयोग, समाजीकरण, सामाजिक नियंत्रण, सामाजिक भागीदारी आदि में परस्पर सहायक होते हैं। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा समुदाय की आलोचनात्मक समीक्षा करके विभिन्न साधनों से इसका आकलन किया जा सकता है। समुदाय की जरूरतों की पहचान करके समुदाय की क्षमता का पता लगाया जाता है।

ये विश्व स्तर पर, वैश्वीकरण, निजीकरण और सामाजिक सुरक्षा के जाल को तोड़ कर, समुदायों के जीवन और आजीविका को प्रभावित करते हैं।

(ख) पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में समुदाय–समुदाय के विभिन्न भागों के बीच विनिमय संबंध घटित होते हैं। विभिन्न भागों के बीच एक अन्योन्याश्रित संबध स्थापित होता है। भौतिक विशेषताएँ सामुदायिक जीवन में पर्याप्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशिष्ट समूहों के साथ-साथ संसाधनों की स्थिति या स्थान का निर्धारण समुदाय की सामाजिक गतिशीलता द्वारा किया जाता है। इस तरह निम्न जाति के समुदाय प्राय: ग्रामीण समुदाय में महत्त्वपूर्ण और केंद्रीय स्थानों से दूर बसाए जाते हैं। अत: महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय सीमा न केवल गुणवत्ता की दृष्टि से भौतिक होती है, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होती है, जो सामाजिक सोपानक्रम को दिखाती है।

यह परिप्रेक्ष्य गतिशील प्रक्रियाओं की मदद से सामाजिक संरचनाओं के उदय को समझने के लिए सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को सक्षम बनाता है। इन गतिशील प्रक्रियाओं का प्रतियोगिता,

www.neerajbooks.com